

एवाली दा. ग क ह न द गी रु ग (वी ली क ॥ ७ ॥)

नाग यमं रुति ॥ धा ॥ ग धा जि वि सं व न च्छि पालि नि पा ॥ न ह्य हि त
 वि व क न क पा ॥ ध्र ॥ पालि न थ ल पा पृथि वी स च ल ल पा ज या
 अ तु श ल दा ह सा पा ॥ व द्वा दि द अ न डा पा अ द्वा तु स म ल पा स्या
 त पृ न ना या ड ड हा पा ॥ ध्र ॥ म तु क स द्वा स र वा पा ल न स द्वा स च्छा
 पा जा ना श ल धा र ग या लि पा ॥ र भ पि नि न ल च्छ पा ना धि का श्य
 दा पा रू ग क ल कं स स न स पा ॥ ध्र ॥ ग व र्ध न ध न

ना॥ गरि॥ वापयुद. वयातकरना॥

॥ ग रि ॥ द्यु का य थि य द्ध न दि व न ना ॥ य हि सं स ॥

मना ॥ गति ॥ आया हंगिनि त्राशु न गमउना ॥ मल न केव ॥

नेपाउना॥ गंदि ॥ १॥ १॥ रागध्वलप॥ को ॥ हसितवदनद्विज. श्री

हयश॥ अथितवतयलन, या अलता क्लया न. अह निहि कला हति धन

॥ इलकलिमदमान. निजवलयेक. अनसालनहि हत्रिचिन्. ज्ञान ॥ ५२ ॥

वचनकर्म लयल. रुमत्रक. तहमत्र. वचनसुनियज इ. ना था॥ सिंहप्रता

५५५

पक ह. जनम जनम तु म. वि न न हि. आनमाहि नाथं ॥ ५५ ॥ २ ॥ ॥
नाग ५५ ल थ ॥ ५५ ॥ का न ह म ख न चि न का य स खि २॥ व त्रि खा स म य थि ल. या
का त वा ना या हि न : कू ल न जि त म न पि ति न ॥ ६४ ॥ ख या वि प ति लाल य म रु या
जि न : त य ग थ जि मि खा क वि न ॥ ५५ ॥ क स खा या ग ल थि न ॥ क स क स
ध व ति न. कू कू सा ता डा त जि म चि न ॥ व ५५ त्रि यु या डा चि न ॥ म य या ना ग
या ति न : जि मि खा न उ म ग का क ग थि न ॥ ५५ ॥ व स त लाल ज ति न. ति या व
न ह या मि न. पु ना व मि त न वि रु ति न ॥ ६५ ॥ लि त्र म म ड कः जा ति ति न
कू या वि व क न म थ थि न ॥ ५५ ॥ जि प्र त्र ना ना हि न : वि न ह या या

सहित वस तव क्राव धुगुतिन ॥ भवजगति यावृष्टि नः ह श यावृम
तिनः क न्नाम तय वि न द्वा य ॥ ५५ ॥ व न न न रु या जिनः अरु
गि या वि न तिनः प न स न श यिव ध नि न ॥ क्रा के क्रा या वा न क्रि नः
ध थि न स त्व या दि नः वि न द या म द य म रि न स रि का ॥ ५६ ॥ ७ ॥ ८
१ त्रा ग ष्य न थ ॥ वा ॥ मा ह न स वि जि जी अ व स मान ॥ व ति षा स म
य स ल न सा ज स वि गु वा स स न त द वा ॥ म ग न क स र वा ल न ह
- द वा स ल क ना व ॥ मा ह ॥ श यि ज अ व ल स स म या ज गु स

मा न ज मा न



मौनवर्ष

१ नागनामक नि॥ ७ ॥ पीठवर्षः दविताह जास्रुहीः हं सताज
२ नागवर्षः माहग्वनीः वनप्रसा ल्या व जज ॥ १ ॥ क म न क मा
ली देवीः सकि हायः वनगान ॥ संखचक्र गदा प लः वं क्वी न
मायी मात ॥ २ ॥ मही स्ववाः हीना देवाः स सु म र्क हाग हाय ॥ ०
द्रा यीनीः देवी मायीः ह सु जा सः व ज हाय ॥ ३ ॥ कनी देवीः को
धन पि द हा वन प्रं न वाङ् ॥ माहा मायीः स्वर्ग हायः स गै ना म
सिंघ वाङ् ॥ ४ ॥ आ ग न ती द्र का जा ग्ल माहा मायीः व न न क ॥ ५ ॥